पद २३

(राग: काफी - ताल: धुमाळी)

पंचमहापातकी बरा। त्याहुनि अधम मी खरा।।ध्रु.।। शरण आलों सुखकरा। ये झडकारीं दीनोद्धारा। तूं दावि आता निजसुखा।।१।। नेति नेति नेतीति वस्तु ती। निगमागमादि गर्जति। तव पदा नेई प्रार्थी। मनोहर माणिकाप्रति। मां पाहि जगन्नायका।।२।।